International Advance Journal of Engineering, Science and Management (IAJESM)
ISSN -2393-8048, July-December 2022, Submitted in December 2022, iajesm2014@gmail.com

पंजाब में क्रान्तिकारी आन्दोलन और महिलायें (1905-1932)

Pushpalata, Research Scholar SunRise University, Alwar
Dr. Rajeev Kumar Jain, Professor, Dept. of History, SunRise University, Alwar, Rajasthan, India.
Corresponding Author E-mail – gfinstitute1234@gmail.com

सार

1857 का स्वाधीनता संग्राम भारतीय इतिहास में एक अभूतपूर्व घटना है। प्रायः सभी वर्ग के लोगों ने अंग्रेजों को भारत से निकालने के लिए अपने पूरे दम-खम के साथ प्रयास किया पर उन्हें अपने लक्ष्य में सफलता न मिल सकी। लेकिन इस संग्राम ने भारत में अंग्रेजी शासन की नींव हिला दी। इस संग्राम में जहाँ पुरुषों ने अपनी वीरता का प्रदर्शन किया वहीं महिलाओं ने भी अपने अदम्य साहस, कर्त्तव्यपरायणता की मिशाल पेश कर न केवल इसे सफल बनाने की कोशिश की बल्कि हँसते-हँसते अपने प्राणों को संग्राम की बलिवेदी पर न्यौछावर कर दिया।इन महिलाओं में रानी लक्ष्मीबाई, बेगम हजरत महल, बेगम जीनत महल, धार की महारानी द्रौपदीबाई, नाना साहब की पुत्री मैना, सैनिक जूही औरमुन्दर, नर्तकी अजीजन, रानी तेजबाई, अवन्तिका बाई लोधी रानी ईश्वरकुमारी चैहान रानी, महारानी तपस्विनी, करमनबाई व धरमनबाई रानीदिगम्बर कौर आदि प्रमुख रही। इस लेख में पंजाब में क्रान्तिकारी आन्दोलन और महिलायें का अध्ययन किया गया है

कीवर्डः पंजाब, क्रान्तिकारी आन्दोलन, महिलायें

पंजाब में क्रान्तिकारी आन्दोलन

प्रथम विश्वयुद्ध (1914-18) के दौरान भारतीय क्रान्तिकारी विशेषकर पंजाब प्रान्त के क्रान्तिकारी अत्यन्त सक्रिय थे। तब गदर पार्टी ने भारत में विप्लव करने के लिए विदेशों से हजारों क्रान्तिकारियों को स्वदेश भेजा था। यद्यपि सशस्त्र विद्रोह करने की उनकी योजना असफल हो गईं थी, किन्तु गदर आन्दोलन का भारतीय क्रान्तिकारियों पर गहरा प्रभाव पड़ा था। इस संदर्भ में शचीन्द्रनाथ सान्याल ने अपनी आत्मकथा 'बन्दी जीवन' में लिखा था:

''गदर पार्टी ने भारत की आजादी के लिए जो कार्यकिये और उसने सेना द्वारा समर्थित जन-क्रान्ति की जो योजना प्रस्तुत की, उसका भारत में रहरहेंक्रान्तिकारियों पर बहुत प्रभाव पड़ा जो शुरू मेंआतंकवादी कार्रवाइयों पर ही ज्यादा जोर देते थें।गदर पार्टी के सम्पकों के कारण ही रासबिहारी बोसऔर अन्य क्रान्तिकारियों की विचारधारा में काफी परिवर्तन हुआ। ये नेता अब सैनिक क्रान्ति करने औरविदेशों से बड़े पैमानें पर मदद लेने की बात सोचने लगे।''

गदर क्रान्तिकारियों की सशस्त्र विद्रोह की विशाल योजना सामने आने के बाद ब्रिटिश सरकार चोकन्नी हो गईं फलतः उसने क्रान्तिकारी आन्दोलन का भयंकर दमन के जरिए उन्मूलन करने की योजना बनाई। पकड़े गए तमाम क्रान्तिकारियों को कठोर यातनाएं दी गईं। शचीन्द्रनाथ सान्याल ने पंजाब की तत्कालीन स्थिति का वर्णन करते हुए लिखाः

''अपनों के विश्वासघात के कारण पंजाब में दो सौ आदमी पकड़े गए। पंजाब का विप्लव दल इस प्रकार पूर्णतः नष्ट हो गया। जो लोग जीवन-मरण के खेल मैं साथी थें, वे अब प्रायः सभी सरकार के कैदी हो गए। जीवित रहते हुए भी वे मानों मर-से गए। पग-पग पर प्रमाणित होने लगा कि उनका यह रास्ता आग के साथ खेलना हैं। कल जो हमारा साथी था, आज वह पुलिस के पंजे में पड़ जाता है। जो विश्वासी था, कल वह विपत्ति में पड़कर कत्र्तव्यनिष्ठा भूल जाता हैं। विप्लवियों के जितने भी केन्द्र थें, एक-एक कर सब प्रकट हो गए। लाहौर के मुहल्ले-मुहल्ले में तलाशी और धर-पकड़ होने लगी। कहीं एक घर में बम मिला तो कहीं दूसरे में तार काटने के औजार।''

ब्रिटिश सरकर ने गदर क्रान्तिकारियों की सशस्त्र क्रान्ति तथाविद्रोह करने की योजनाओं की जांच करने के लिए एक ओर रॉलेट कमेटी बैठायी, तो दूसरी ओर तत्कालीन भारत मंत्री लार्ड मांटेग्यू और वायसराय चैम्सफोर्ड ने इस बात की सिफारिश की कि भारत को उत्तरदायित्वपूर्ण शासन की ओर अग्रसर करने के लिए क्रमशः 'राजनीतिक सुधार' किए जाऐं। दमन और तुष्टीकरण की यह नीति साम्राज्यवाद की नई चाल थी। 15 अप्रैल 1918 को रॉलेट कमेटी की रिपोर्ट प्रकाशित हुई। इस रिपोर्ट के जरिए पहली बार भारतीय जनसाधारण तथा विदेशियों को यह ज्ञात हुआ कि 'गदर' नामक क्रान्ति दल कितना सुसंगठित

और मजबूत था। रिपोर्ट में गदर क्रान्तिकारियों की तमाम योजनाओं तथा कार्यवाहियों का विशद् विवरण दिया गया था।

विश्व युद्ध के समाप्त हो जाने के बाद ब्रिटिश सरकार ने भारतीयों को राहत या सुविधाएं देने की बजाय रॉलेट कमेटी की कठोर सिफारिशों को लागू करते हुए कुख्यात 'रॉलेट एक्ट' जैसा कठोर कानून पास कर दिया। इस कानून के अनुसार सरकार को जिस वक्त भी वह चाहे तथा जिस किसी को भी चाहे, नजरबन्द करने का अधिकार मिल गया था। स्वाभाविक रूप से इस एक्ट के विरोध में पंजाब में जगह-जगह हड़तालें हुईं तथा जुलूस निकाले गये। ब्रिटिश सरकार इस प्रतिरोध आन्दोलन को कुचल देना चाहती थी फलतः 13 अप्रैल 1919 को अमृतसर के जलियांवाला बाग में साम्राज्यवादी हुकूमत द्वारा इतिहास के एक क्रूरतम हत्याकांड को अंजाम दिया गया जिसमें जनरल ओ डायर ने विरोध सभा कर रही निहत्थी जनता पर गोलियां बरसा कर सैंकड़ों लोगों को मार डाला। गिरधारी लाल नामक एक क्रान्तिकारी ने यह सारा बीभत्स दृश्य अपनी आंखों से देखा था। उस लोमहर्षक घटना का वर्णन करते हुए वे लिखते हैं:

''मैंने सैकड़ों लोगों को घटना स्थल पर मरते हुए देखा। सर्वाधिक बुरी बात तो यह थी कि जिन दरवाजों की ओर लोग बाहर निकलने के लिए दौड़ रहे थें, उनकी ओर भी गोलियां बरसाई जा रही थीं। कुछ लोग भागती हुई भीड़ के पावों तले कुचले गये। गोली लगने से कई लोगों के चिथड़े उड़ गए थे। कुछ की आंखों में गोली लगी, तो कुछ के कानों में। कुछ की छातियाँ, हाथ अथवा पैर गोली लगने से फट गएँ ।''

पंजाब में क्रान्तिकारी आन्दोलनः महिलाओं की भूमिका

निःसन्देह भारतीय क्रान्तिकारी आन्दोलन में महिलाओं का योगदान कम महत्त्वपूर्ण नहीं रहा। प्रारम्भ से ही इस आन्दोलन में महिलाओं की भागीदारी रही है। विशेषकर बंगाल में महिलाओं ने सबसे ज्यादा संख्या में इस आन्दोलन में बढ़-चढ़ कर भाग लिया था। बंगाल की इन क्रान्तिकारी महिलाओं पर काफी शोधकार्य हुआ हैं जिसमे इन महिलाओं के क्रान्तिकारी कार्यों की विस्तार से जानकारी मिलती हैं। इन महिलाओं में प्रमुख रूप से सुनीति चैधरी, शान्ति घोष, लीला नाग, कल्पना दत्त, बीना दास, प्रीतिलता और कल्याणी दास शामिल थी। लेकिन उत्तर भारत में भी क्रान्तिकारी आन्दोलन में महिलाओं की भागीदारी पर्याप्त रही। विशेषकर पंजाब की कई क्रान्तिकारी महिलाओं ने इस आन्दोलन में बड़ा महत्त्वपूर्ण योगदान दिया। इनमें मुख्य निम्नलिखित थी:-

- **दुर्गा देवी:**

उत्तर भारत की प्रमुख क्रान्तिकारी महिलाओं में दुर्गा देवी (1907-1999) का नाम सबसे महत्त्वपूर्ण माना जा सकता है। यह महिला पंजाब के प्रसिद्ध क्रान्तिकारी भगवतीचरण वोहरा की पत्नी थी। वोहरा चन्द्रशेखर आजाद, सुखदेव, भगत सिंह, यशपाल, धनवंतरि एवं बटुकेश्वर दत्त के साथी थे। इस कारण ये सभी क्रान्तिकारी दुर्गा देवी को 'दुर्गा भाभी' कहा करते थे। एक लेखक ने उनके बारे में लिखा है:

''स्वाधीनता के स्वर्ण जयन्ती वर्ष में उन महान विभूतियों के प्रति विनम्र कृतज्ञता और आन्तरिक आभार व्यक्त करना हमारा नैतिक कत्र्तव्य तथा राष्ट्रीय दायित्व हैं जिन्होंने अपने जीवन को समिधा की तरहहोम कर स्वात्रंत्र्यपक्ष की पावन अग्नि को सदाप्रज्ज्वलित रखा। वे जिन्दगी भर सूरज की तरहजलते रहें और जिन्दगी भर सूरज की तरह चलतेरहें। हमारी आजादी के ऐसे ही नींबे के पत्थरों में 'दुर्गा भाभी' का नाम अग्रणी हैं जो आधुनिक भारतके क्रान्ति-युग की जीवन्त प्रतीक हैं।''

- **सुशीला देवी**

पंजाब की क्रान्तिकारी महिलाओं में दूसरा बड़ा नाम सुशीला देवी या सुशीला मोहन का था। उन का जन्म 5 मार्च 1905 कोपंजाब में गुजरावाला के एक गांव दत्तो चूहड़ में हुआ था। उनके पिता डॉ० कर्मचन्द भारतीय फौज में मेडीकल अफसर थे। 1927 में जब वे सेवानिवृत हुये, तब प्रथम विश्व युद्ध के बाद देश की बिगड़ती आर्थिक हालात और ब्रिटिश हुकूमत और ब्रिटिश हुकूमत की शोषणकारी नीतियों के चलते उनके मन में गहन निराशा व्याप्त थी। अतएव, उन्होंने अंग्रेजी सरकार द्वारा प्रदत्त 'राय साहब' की उपाधि और 'युद्ध सेवा मैडल' स्वीकार नहीं किए। वे लोकमान्य तिलक के विचारों से प्रभावित थे, जिसके कारण देश-भक्ति की भावना उनमें प्रखर रूप से उत्पन्न हो चुकी थी।

सुशीला देवी की किशोरावस्था केकिशोरावस्था के समय उनकी माता का देहान्त हो गया। परिवार में बड़ी सन्तान होने के कारणछोटे-भाई बहनों की देखभाल करने का काम भी उन पर आन पड़ा। उनके दो छोटे भाई तथा दो बहनें थी। दोनों भाई नेशनलस्कूल तथा (उन समेत) बहनें कन्या विद्यालय, जालन्धर में पढ़े। 1921 से 1927 के दौरान सुशीला जालन्धर स्थित कन्या महाविद्यालय की छात्रा रही। यहीं से उन्होंने अपनी स्नातक कीशिक्षा पूरी की। इसी महाविद्यालय की प्रधानाचार्या लज्जावतीछात्राओं में राष्ट्रीयतावादी भावनाएं भरने के लिए प्रसिद्ध थी।उनकी कई छात्राएं बाद में स्वतंत्रता सेनानी बनी थीं और सुशीलादेवी उन्हीं छात्राओं में से एक थी। अपनी अध्यापिका की प्रेरणासे उन्होंने अनेक देशभक्तिपूर्ण कविताएं और प्रेरणागीत लिखे। जब लाला लाजपत राय को ब्रिटिश हुकुमत द्वारा गिरफ्तार किया गया तो उनकी गिरफ्तारी पर उन्होंने प्रसिद्ध पंजाबी गीत लिखा: "गया ब्याहन आजादी, लाड्डा भारत दा।" उन्होंने इस गीत को पर्ची के रूप में छाप कर सारे पंजाब में बांटा।

उनके पिता की सरकारी नौकरी पर कोई आंच न आए, इसलिए सुशीला देवी कालेज की छुट्टियां लाहौर में प्रसिद्ध क्रान्तिकारी भगवतीचरण वोहरा की पत्नी दुर्गा देवी के घर बिताती थी। दरअसल यहाँ उनकी अध्यापिका लज्जावती ने उनके रहने का प्रबंध करवा दिया था। सुशीला देवी और दुर्गा देवी का रिश्ता 'ननद' और 'भाभी' का बना। दुर्गा देवी के घर आने वाले सभी क्रान्तिकारी सुशीला देवी को 'दीदी' और दुर्गा देवी को 'भाभी' कहा करते थे। 1926 में देहरादून में हुए 'हिन्दी साहित्य सम्मेलन' में जालन्धर कॉलेज से कई छात्राएं गई थी, जिनमें सुशीला देवी भी शामिल थी। वे वहाँ पर लाहौर नेशनल कॉलेज के विद्यार्थियों भगत सिंह और उसके क्रान्तिकारी साथियों से मिली। वहाँ पर उनके द्वारा दियें गये गुप्त परचें उन्होंने जालन्धर में बड़ी सावधानी से वितरित किये और तो और, उन्होंने डाक से ये परचे कुछ बड़े अधिकारियों के पास भी भेज दिये। किन्तु सरकार को उनके प्रेषक का कोई पता नहीं चल सका।

- **प्रकाशवती पाल**

प्रकाशवती पाल पंजाब के प्रसिद्ध क्रान्तिकारी यशपाल की पत्नी थी। उनके पिता बैजनाथ कपूर लाहौर में एक व्यापारी थे। किन्तु प्रकाशवती पाल अपना जीवन अन्य सम्पन्न महिलाओं की तरह सुख-सुविधा में नहीं गुजारना चाहती थी, बल्कि अपने आप को देश सेवा हेतु अर्पित करना चाहती थी। वे भारत-भूमि को विदेशियों से आजाद करवाना चाहती थी। उस जोखिम भरे लक्ष्य की राह पर चलते हुए उन्हें अनेक संकटों का सामना करना पड़ा। उन्होंने अनेक कष्ट उठाए, परन्तु लक्ष्यसिद्धि के बाद ही सामान्य जीवन जिया।

प्रकाशवती की प्रारम्भिक शिक्षा लाहौर में हुई थी। लाहौर में एक कन्या महाविद्यालय में अध्ययन करते समय उनमें पंजाब के क्रान्तिकारी आन्दोलन के प्रति रूचि पैदा हुई। जैसा कि हम पहले जान चुके हैं, उस काल के दौरान गुप्त रूप से पंजाब में भगत सिंह, यशपाल, भगवतीचरण वोहरा एवं अन्य क्रान्तिकारी सक्रिय थे। अपनी एक अध्यापिका प्रेमवती के माध्यम से प्रकाशवती तथा उनकी सहेलियां उक्त क्रान्तिकारियों को आर्थिक सहायता देती रहती थी।

लाहौर में जब प्रथम बार 1920 में विदेशी कपड़ों की होलीजलायी गईं, तब प्रकाशवती ने अपने सबसे महंगे अंग्रेजी कपड़े जला दिये थे। वे लाहौर में हुए कांग्रेस अधिवेशन में वालंटियर बनकर पहुंची थी। उक्त अधिवेशन में मनमोहिनी जुत्सी लड़कियोंके 'वालंटियर ग्रुप' की इंचार्ज थी। उन्होंने ही प्रकाशवती एवंअन्य छात्राओं को भगत सिंह एवं उनके साथियों से मिलवाया था।शीघ्र ही प्रकाशवती की भेंट पंजाब के ही एक अन्य क्रान्तिकारी यशपाल से हो गई। उन्होंने प्रकाशवती से क्रान्तिकारी दल कासदस्य बनने का आग्रह किया। दरअसल उस समय क्रान्तिकारी दलके सदस्यों को कुछ ऐसी समर्पित लड़कियों की आवश्यकता अनुभवहो रही थी जो अपना घर-बार छोड़कर दल के लिए पूर्णतः समर्पित होकर काम करे। उन्होंने दल का सदस्य बनने के लिए सहमति दे दी और अपने पिता का घर छोड़ दिया। घर से जाते समय उन्होंने अपने पिता के नाम एक पत्र लिखकर देश के कार्य के लिए घर छोड़ने के अपने निश्चय से परिवार के सदस्यों को अवगत करवाया था। इस दुसाहसपूर्ण निर्णय को याद करते हुए उन्होंने बाद में एक बार कहा था:

''घर छोड़ने से पहले मुझे न तो पार्टी के कार्यों की कोई जानकारी थीं और न ही इसके लिए उठाए जाने वाले खतरों की गम्भीरता का अहसास था।''

- **सरला देवी**

पंजाब में काम करने वाली क्रान्तिकारी महिलाओं में सरलादेवी का नाम भी मुख्य रूप से उभर कर आता है। उनका जन्म 1872 में हुआ था। वे असल में कविवर रविन्द्रनाथ टैगोर की भतीजी थी। उनकी माता स्वर्ण कुमारी ने स्वदेशी आन्दोलन मेंबढ़-चढ़ कर भाग लिया। अपनी माता के त्याग व प्रेरणा से उनमें देशभक्ति की भावना जागृत हुई। उनके पिता जानकीनाथ घोषाल स्वतंत्रता सेनानी और भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के एक प्रमुख कार्यकत्र्ता थे। उस काल के दौरान जब शिक्षा कुछ गिनी-चुनी लड़कियां हीहासिल कर पाती थीं, सरला देवी ने बारह वर्ष की उम्र में मैट्रिक,चैदह वर्ष की उम्र में इण्टर और सत्रह वर्ष की उम्र में बी०ए० (अंग्रेजी आनर्स) कर लिया था। उनकी इण्टर की परीक्षा मेंइतिहास के प्रश्न पत्र में मैकाले द्वारा लिखित 'लार्ड क्लाइव' नामकपाठ्य पुस्तक में क्लाइव की 'बंग विजय' पर एक प्रश्न पूछा गया था। अपनी उक्त पुस्तक में मैकाले ने लिखा था कि क्लाइव नेबंगाली चरित्र को हेय बताते हुए पूरे बंगाली समाज की खिल्ली उड़ाई थी। इस प्रश्न का उनके किशोरवय संवेदनशील मानस परजो गम्भीर प्रभाव पड़ा, उसका स्वयं उल्लेख करते हुए सरला देवी ने अपनी जीवनी में लिखा:

''मैकाले की 'लार्ड क्लाइव' नामक पुस्तक को मैंनेजिस दिन देखा, उसी दिन से (अंग्रेजों) मैकाले केप्रति मेरे मन में घृणा का बीजारोपण हो गया थाऔर अपनी बंगाली जाति एवं समाज के प्रति मेरासिर आत्माभिमान से ऊँचा हो गया था। मैकाले कीदुर्भावना का बदला लेने का अवसर मुझे दस-बारहसाल बाद जाकर तब मिला, जब मैं अपने देश औरअपनी जाति को समुन्नत बनाने के लिए(राजनैतिक-सामाजिक) कार्यक्षेत्र में उतरी।''

- **शकुन्तला:**

शकुन्तला सुशीला देवी की छोटी बहन थी। उन्होंने अपनीबी०ए० की पढाई बीच में छोड़कर अपनी बहन की प्रेरणा सेक्रान्तिकारी आन्दोलन में सहायता की थी। विशेषकर सुशीला देवीके कागज-पत्र इधर-उधर पहुंचाना उनका मुख्य कार्य होता था।जहाँ सुशीला के पकड़े जाने का अंदेशा होता था, वहाँ वे खुदगोपनीय संदेशों को पहुंचाती थी। जेल में भगत सिंह व उनकेक्रान्तिकारी साथियों से मिलकर संदेश लाना एवं ले जाना आदि कार्यों में भी उनकी भूमिका रही थी।

- **सत्यवती तलवार**

1912 में जब रासबिहारी बोस क्रान्तिकारी आन्दोलन को संगठित करने पंजाब आए थे, तब उन्हें किराये पर मकान नहींमिल पा रहा था क्योंकि वे अविवाहित थे। पंजाब के राष्ट्रवादीरामशरणदास तलवार रासबिहारी बोस के अंतरंग मित्र थे। अतः उन्होंने अपनी पत्नी सत्यवती तलवार को रासबिहारी बोस के साथउनकी नकली पत्नी के रूप में किराये के मकान में रहने के लिएभेज दिया। उस जमाने में सत्यवती ने लाहौर में एक अनजान क्रान्तिकारी व्यक्ति के साथ किराये के मकान में रहने का जोखिमउठाया। निश्चय ही उनके द्वारा देश-धर्म हेतु उठाया गया यहमहान् कदम था क्योंकि यह कार्य हिन्दू धर्म के रिवाजों के सरासरविरूद्ध था।

SHRADHA EDUCATIONAL ACADEMY

उपसहार

पंजाब मेंक्रान्तिकारी आन्दोलन में अनेक महिलाओं ने बढ़-चढ़ कर योगदानदिया। लगभग सभी ऐसी महिलाओं का प्रत्यक्ष या परोक्ष सम्बन्धभगत सिंह एवं चन्द्रशेखर आजाद जैसे बड़े क्रान्तिकारी के साथ थाजिनकी सहायता हेतु उन्होंने व्यापक कार्य किए। परन्तु उक्तमहिलाएं मात्र सहायक की भूमिका तक ही सीमित नहीं थी, अपितु उनमें जबरदस्त क्षमताएं थीं जो उन्होंने मौके पड़ने पर प्रदर्शित की और क्रान्तिकारी आन्दोलन में अपनी ओर से महान आहुति दी।

संदर्भ

सक्सेना, शंकर सहाय, क्रान्तिकारी आन्दोलन का इतिहास, ग्रन्थविकास प्रकाशन, जयपुर, 2010.
सक्सेना, बलबीर, भारत की क्रान्तिकारी महिलाएं, नई दिल्ली,2007.
शर्मा, श्रीप्रकाश, आधी आबादी का संघर्ष, राजकमल प्रकाशन,नयी दिल्ली, 1956.
शर्मा, मालती, स्वतंत्रता संग्राम और महिलाएँ, शिवांक प्रकाशन,नई दिल्ली, 2011.
शर्मा, नरेश कुमार, स्वतंत्रता संग्राम की भारतीय वीरांगनाएं, अनुप्रकाशन, नई दिल्ली, 2000.
वड़ैच मलविंदर सिंह, भगत सिंह: अमर विद्रोही, प्रकाशनविभाग, नई दिल्ली, 2013.
वडैच मलविंदर सिंह व सिधु, गुरुदेव सिंह, दि हैंगिग ऑफ भगतसिंह, यूनिस्टार, पब्लिशर्स, चंडीगढ़, 2000.
मिश्र, शिव कुमार, गदर पार्टी से भगत सिंह तक, लोक प्रकाशनगृह, दिल्ली, 2014.
मालवीय, कपिलदेव, ओपन रिवोल्यूसन इन दिन पंजाब, इलाहाबाद,1984.